पायनियर्स की कहानी

एलेअनोर, चित्र : ब्रुस

हिंदी : विदूषक

पायनियर्स की कहानी

एलेअनोर, चित्र : ब्रुस

हिंदी : विदूषक

खंड

ज़ोज़फीना

कैलिफ़ोर्निया!

मुश्किल

बचाव

चोर!

गुडबाय ज़ोज़फीना

ज़ोज़फीना

मई 1850 की बात है.

फेथ बहुत उत्तेजित थी.

वो सब लोग एक बंद गाड़ी (वैगन) में

कैलिफ़ोर्निया जा रहे थे.

“माँ,” फेथ ने पूछा, “क्या मैं अपने साथ

ज़ोज़फीना को ले जा सकती हूँ?”

ज़ोज़फीना, फेथ की सबसे प्रिय मुर्गी थी. फेथ उसे बहुत प्यार करती थी. जब ज़ोज़फीना उसके गोदी में बैठती तो फेथ को बहुत अच्छा लगता.
वो हमेशा फेथ के पीछे-पीछे दौड़ती.
माँ यात्रा के लिए ब्रेड बना रही थीं.
"अपने पापा से पूछो," उन्होंने फेथ से कहा.

पापा और फेथ का भाई एडम गाड़ी में सामान लाद रहे थे.

“प्लीज पापा,” फेथ ने कहा, “क्या मैं साथ में ज़ोज़फीना को ले जा सकती हूँ?”

“गाड़ी में पालतू जानवरों के लिए कोई जगह नहीं है,” पापा ने कहा.

“यह बात तो ठीक नहीं है,” फेथ ने कहा.

“एडम अपना छोटा घोड़ा साथ ले जा रहा है.”

“वो छोटा घोड़ा पालतू नहीं है,” पापा ने कहा.

“छोटा घोड़ा अपनी पीठ पर मक्का के बोरे ढो सकता है.”

“बताओ ज़ोज़फीना क्या कर सकती है?” एडम ने बहन को चिढ़ाते हुए कहा.

“ज़ोज़फीना अंडे देने के लिए बहुत बूढ़ी है, और खाने के लिए बहुत सख्त है.”

फेथ की आँखों में आंसू भर आए.
वो घर में दौड़ी हुई गई.
माँ दोलन-कुर्सी पर बैठीं और
उन्होंने फेथ को अपनी गोदी में बैठाया.
“हम सभी को चीज़ें छोड़कर जानी हैं,”
उन्होंने ज़ोज़फीना को समझाया.
“देखो, मुझे यह दोलन कुर्सी बहुत
पसंद है. पर उसके लिए गाड़ी
में जगह ही नहीं है.”
फेथ अपने आंसू पी गई.

“मैंने ज़ोज़फीना की उसके
छुटपन से देखभाल की है,”
फेथ ने कहा.
“अब उसका क्या होगा?”

“शायद कोई पड़ोसी उसे पाल ले,”
माँ ने कहा.
पर कोई भी ऐसी बूढ़ी मुर्गी नहीं
चाहता था. ऐसी मुर्गी जो अंडे भी
न दे और खाने में सख्त हो.

कैलिफ़ोर्निया!

सुबह-सुबह वैगन लदकर तैयार हो गई.
उसकी छत सफ़ेद रंग की थी और
उसकी किनार नीले रंग की थी.
माँ ने पीछे हटकर उसको निहारा.
“पहियों पर फूल का बड़ा गुलदस्ता
लगता है!” उन्होंने कहा.
“क्यों है न सुन्दर?”
पर फेथ ने कोई उत्तर नहीं दिया.
उसे बस ज़ोज़फीना की फ़िक्र थी.

“क्या आपने खाना पैक किया?”
माँ ने पापा से पूछा.
“और मेरे किचन का सामान?”
पापा ने अपना सिर हिलाया.
“फिर गद्दों के आलावा बाकी सब
कुछ पैक हो गया,” माँ ने कहा.
फेथ ने दुखी होते हुए सोचा,
“और ज़ोज़फीना!”
पापा ने गद्दे गाड़ी में डाले.
माँ ने बड़ी सावधानी ने पैच-वर्क
की रजाई गद्दों पर बिछाई.

फेथ ने ज़ोज़फीना को उठाया और अपने गले से लगाया.
“मैं भी अपनी मुर्गी को छोड़कर नहीं जा सकती,” उसने कहा.

“हम इस रजाई को पीछे छोड़कर नहीं जा सकते,” माँ ने कहा.
“हमारी तमाम खुशियाँ और दुःख इन चौकोर कपड़ों में सिले हैं.”

“ज़ोज़फीना को यहीं रहना होगा!”
पापा ने कहा.
“इसलिए तुम उसे ज़मीन पर रख दो.”
फेथ दुःख के मारे वहीं ख़ड़ी रही.
उसने ज़ोज़फीना के पंख सहलाए और
बहुत कोशिश से अपने आंसू रोके.
माँ ने पापा को एक विशेष अंदाज़ में देखा.
फिर पापा ने एक आंह भरी.
“ठीक है फेथ,” पापा ने कहा.
“पर अगर ज़ोज़फीना ने कोई मुश्किल पैदा
की तो हम उसे वहीँ उतार देंगे.”
“धन्यवाद पापा!” फेथ ने रोते हुए कहा.
“ज़ोज़फीना कोई मुश्किल पैदा नहीं करेगी,
मैं आपसे वादा करती हूँ.”

उसके बाद माँ ने ज़ोज़फीना को
एक थैला पकड़ाया.
“जब फुर्सत मिले तब कुछ पैच-वर्क
का काम करना,” माँ ने कहा.
फेथ को पता था कि पैच-वर्क की रजाई
पुरानी यादों के लिए कितनी महत्वपूर्ण थी.

फिर फेथ ने ज़ोज़फीना को उसके
पिंजड़े में रखा.
पापा ने पिंजड़े को गाड़ी की छत
से टांग दिया.
फिर उन्होंने फेथ को ज़ोज़फीना
के पास ही बैठाया.

"चलो, कैलिफ़ोर्निया !"
फिर पापा चिल्लाए.
उन्होंने अपने लम्बे चाबुक को
फटकारा.
तब बैलों ने चलना शुरू किया.

बैलों के गलों में बंधी
घंटियाँ बजने लगीं.
गाड़ी की जंजीरें खटखट करने लगीं.
और पहिए भी संगीत पैदा करने
लगे.

फेथ, ज़ोज़फीना को देखकर मुस्कुराई.
पश्चिम की लम्बी यात्रा में
यह पिंजड़ा ही उसका घर होगा.
फेथ ने थैले से कुछ कपड़ा निकाला.
“अब मैं इस यात्रा का पहला पैच-वर्क
बनाऊँगी,” उसने कहा.
उसके बाद फेथ कपड़े पर बड़ी
सावधानी और छोटे-छोटे टांकों से
गाड़ी के पहिए का डिज़ाइन बनाने
लगी.

मुश्किल

रात को कई वैगंस एक
गोले के आकार में ख़ड़ी हो गईं.
महिलाओं ने कैंप-फायर पर
खाना पकाया.

कुछ देर बाद लोगों ने गाने गए
और बैंजो बजाए.
फेथ ने पहिए की कढ़ाई का काम
रख दिया.
उसने कुछ देर के लिए ज़ोज़फीना को
घूमने के लिए पिंजड़े से बाहर निकाला.

तुरंत एक कुत्ता भूंका!!
वो ज़ोज़फीना के पास जाकर उसपर
जोर-जोर से भूँका.
ज़ोज़फीना डर के मारे चिल्लाते हुए
भागी.
“वापिस आओ!” फेथ चिल्लाई.
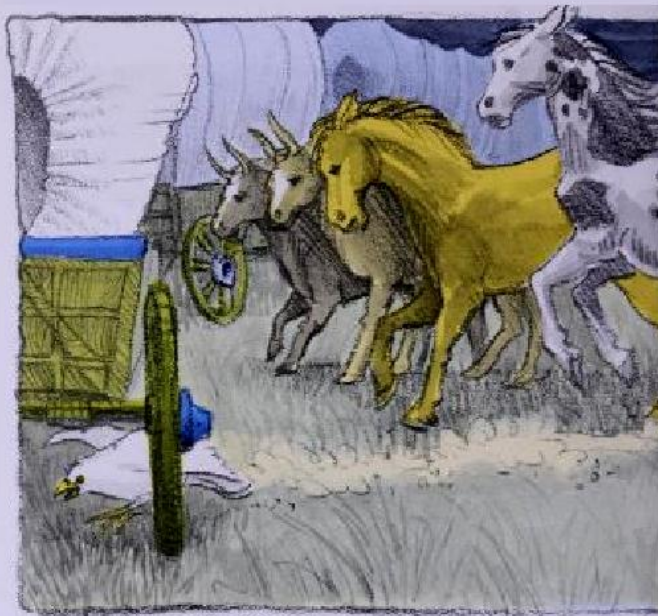
पर तब तक देर हो चुकी थी.
ज़ोज़फीना अन्य जानवरों के बीच में थी.
घोड़ें भी उसे देखकर हिनहिना रहे थे.

गाय रम्भा रही थीं
और अपने पैर पटक रही थीं.
बैल जोर-जोर की आवाज़ कर रहे थे.
“वो शरारती मुर्गी!” पापा चिल्लाए और
उसके पीछे भागे.

“उसने तो यहाँ पर भगदड़ ही
मचा दी,” पापा ने गुस्से में कहा.
“अब वो गाड़ी में नहीं जाएगी!”
“माफ़ करें!” फेथ ने प्रार्थना की,
“कृपा उसे एक मौका और दें.
वो सब उस कुत्ते की गल्ती थी.”

“फेथ ठीक ही कह रही है,”
माँ ने भी कहा. “मैंने पूरा कांड देखा.”
उसके बाद पापा ने ज़ोज़फीना को
दुबारा पिंजड़े में रख दिया.
“बस एक और मौका,” उन्होंने कहा.

उस रात फेथ फुसफुसाई,
“ज़ोज़फीना कृपाकर संभल कर रहना.”
“क्लैक!... क्लैक!... क्लैक!...”
मुर्गी ने कहा.
वो दोनों एक-दूसरे को,
अच्छे दोस्तों की तरह जानते थे.

बचाव

काफी समय तक ज़ोज़फीना का बर्ताव
बहुत अच्छा रहा.
वो चुपचाप फेथ को रजाई के पैच-वर्क
नमूने बनाते हुए देखती रहती.
जब वैगन की छत पर ओले बरसे तो भी
ज़ोज़फीना ने कोई शोर नहीं मचाया.
जब तेज़ बारिश ने ज़ोज़फीना के पंख
गीले किए तब भी वो एकदम चुप रही.

जब रात को जंगली कुत्ते भूंकते
तो ज़ोज़फीना कुछ
क्लैक!... क्लैक!...करती.
पर जब वैगन ने नदी पार की
तो ज़ोज़फीना ने बहुत हल्ला
मचाया!
एक दिन वो एक मटमैली नदी
के किनारे पहुंचे. तब फेथ ने
ज़ोज़फीना को उसके पिंजड़े के
बाहर निकाला. फेथ ने उसे
अपने गले से लगाकर रखा.
“सब ठीक होगा,” फेथ ने कहा.
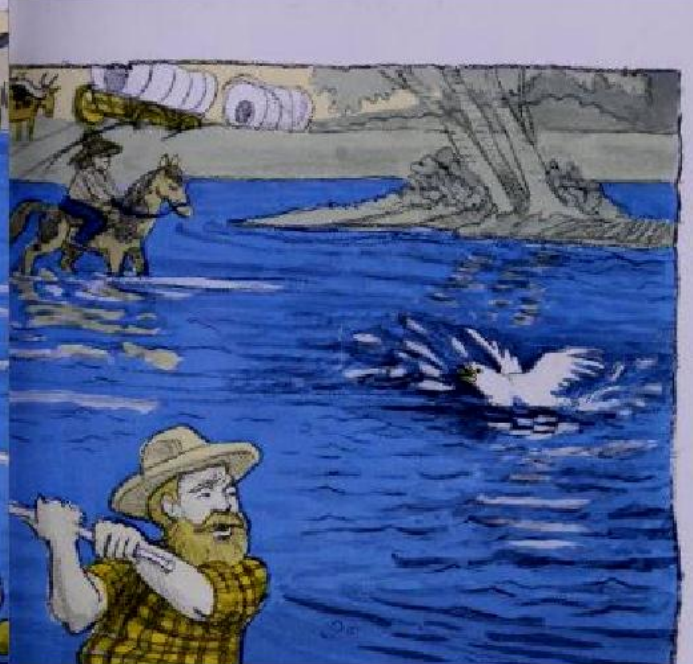
पापा बैलों को पानी में जाने के लिए
हांक रहे थे,
तभी एक तेज़ आवाज़ करके वैगन का
पिछला पहिया एक गड्ढे में फंस गया.

तब फेथ ने ज़ोज़फीना को छोड़ दिया.
ज़ोज़फीना नदी में जा गिरी.
पानी का बहाव उसे दूर ले गया.

"मदद करो!" फेथ चिल्लाई.
"ज़ोज़फीना को बचाओ!"
एडम, झट से नदी में कूदा पर
पानी का बहाव बहुत तेज़ था.
उनको पानी से बाहर निकालने में
पूरे तीन आदमी लगे.

"अब ज़ोज़फीना का भविष्य पक्का
हो गया!' पापा ने कहा.
"वो अंडे देने के लिए बहुत बूढ़ी है,
और उसका मीट बहुत सख्त है,
और फिर वो नदी में गिरती है.
अब हम उसे यहीं छोड़ जायेंगे!"

बस तभी ज़ोज़फीना ने अपने पंख फड़फड़ाए और बड़े गर्व से "क्लैक!... क्लैक!..." की आवाज़ की. फिर उसने एक सुन्दर सफ़ेद अंडा दिया.

"अरे वाह!" पापा ने कहा.

"ज़ोज़फीना ने अब दुबारा अंडे देने शुरू कर दिए हैं."

"बहुत खूब!" माँ ने कहा.

"अब हमें ताज़े अंडे खाने को मिलेंगे."

इसलिए ज़ोज़फीना उनके साथ रही.

चोर!

वसंत के बाद गर्मी आई.
रेगिस्तान बहुत सूखा और गर्म था.
फेथ ने अपने बनाए पैच-वर्क गिने.
अब तक वो कुल पंद्रह चौकोरों पर कढ़ाई कर चुकी थी.
वो एक चौकोर पर रेगिस्तान बनाना चाहती थी.

फिर एक के बाद एक करके आफतें आना शुरू हुईं.
वैगन के पहिए बार-बार निकलते रहे.
जानवरों के लिए पर्याप्त खाना नहीं बचा.
तीन बैल मर गए.
पापा ने अपना भारी टूल-बॉक्स और माँ ने भारी लोहे का स्टोव फेंक दिया.
दो बूढ़े लोगों की मृत्यु हुई.
उन्हें रास्ते में ही दफना दिया गया.
अब सबका हँसना, गाना और मुस्कुराना बंद हो गया.

फेथ को अब बहुत भूख लगती थी.
वो अब लगातार पैदल ही चलती थी.
रास्ते में वो ज़ोज़फीना के लिए दाना
और चुग्गा ढूँढती.
जब पहाड़ियों पर चढ़ना होता
तो और मुश्किल होती.
पहाड़ियों पर बहुत पत्थर थे
और चढ़ाई भी बहुत थी.
एक दिन स्थानीय लोग (इंडियन्स)
भैंस का मीट और पानी बेंचने आए.
वो माँ की बनाई रजाई खरीदना चाहते थे.
“नहीं! कभी नहीं!” माँ ने कहा.
“मैं भूखे मर जाऊंगी पर रजाई नहीं बेंचूंगी.”
इंडियन्स, ज़ोज़फीना को भी खरीदना चाहते
थे.

“नहीं! कभी नहीं!” फेथ ने कहा.
“मैं मर जाऊंगी पर ज़ोज़फीना
को नहीं बेंचूंगी.”

फिर पापा ने कुछ गैर-ज़रूरी कपड़े बेंचकर इंडियन से कुछ खाना और पानी खरीदा.

पेट भर खाकर सबको अच्छा लगा. पर जल्द ही सब खाना फिर से ख़त्म हो गया.

"अगर इंडियन्स दुबारा वापिस आए, तो हम ज़ोज़फीना के बदले उनसे पानी लेंगे,"

पापा ने फेथ से कहा.

फेथ ने प्रार्थना की, कि इंडियन्स कभी वापिस न लौटें.

उस रात बहुत कड़क सर्दी पड़ी.
सब मर्द वैगन के नीचे सोए.
माँ ने अपनी रजाई पापा और एडम
को दी.
माँ और फेथ पुराने कम्बल
ओढ़कर सोईं.

आधी रात को दो चोर कैंप
में घुस आए.
वो गाड़ी में घुसकर कम्बल
चुराने लगे.
ज़ोज़फीना ने तुरन्त उन्हें सुना.
वो जोर से “क्लैक!... क्लैक!...”
करके चिल्लाई.

ज़ोज़फीना की आवाज़ सुनकर
सब लोग उठ गए.
फिर चोर तुरंत भाग गए.
पापा बहुत दिनों बाद जोर से हंसें.
"ज़ोज़फीना चाहें बूढ़ी हो," पापा ने
कहा, "पर वो बहुत अच्छी पहरेदार है."
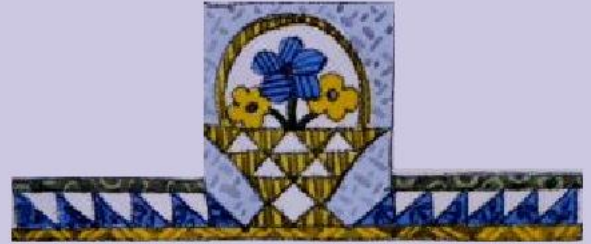
गुडबाय ज़ोज़फीना

पापा, ज़ोज़फीना का शुक्रिया अदा करने
के लिए उसके पिंजड़े के पास गए.
पर वो बिचारी मुर्गी अपने पिंजड़े में
औंधी पड़ी थी.
उसे देखते ही फेथ माँ से लिपट गई.

अगले दिन सुबह उन्होंने
ज़ोज़फीना को दफनाया.
फेथ ने ज़ोज़फीना को एक
सुन्दर कपड़े में लपेटा.
फिर एडम ने उसे एक ऊंचे चीड़
के नीचे दफनाया.

"तुम हिम्मत से काम लो,"
माँ ने फेथ को प्यार से समझाया.
"ज़ोज़फीना ने एक अच्छी लम्बी और
ज़िन्दगी जी है," पापा ने कहा.
"उसने मरते-मरते भी हमारी मदद की,"
एडम ने कहा.

“मैं ज़ोज़फीना के लिए एक चीड़ के पेड़ का डिजाईन बनाऊँगी’ फेथ ने कहा.

“मुझे उसकी बहुत याद आती है,” फेथ ने रोते हुए कहा.
फिर उसने अपने थैली में से एक चौकोर कपड़ा निकला.
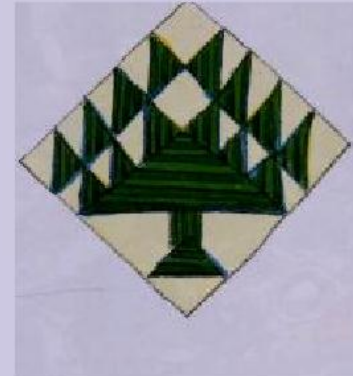
जब उनकी वैगन कैलिफ़ोर्निया पहुंची तब तक फेथ अपना पैच-वर्क पूरा कर चुकी थी.

पापा ने उनके नए घर में
एक पलंग का फ्रेम बनाया.
फिर पूरे परिवार ने फेथ के
पैच-वर्क के टुकड़ों को
जोड़कर उनसे एक रजाई
बनाई.
रजाई, फेथ के पलंग पर पूरी
फैल जाती थी.
हर रोज़ उस नायाब रजाई के
डिजाईन फेथ को, उस लम्बी
यात्रा के दौरान घटी खुशियों
और ग़मों की याद दिलाते थे.

हर रात फेथ को, ज़ोज़फीना की कहानी की रजाई ओढ़कर गर्मी और ख़ुशी मिलती थी.

लेखक का नोट

1850 के आसपास हजारों अमरीकी पायनियरों ने बेहतर ज़िन्दगी के लिए पश्चिम की ओर पलायन किया.
वो यह यात्रा बंद वैगन में करते.
वे अक्सर अपनी यात्रा वसंत में मिसौरी शहर के आसपास से शुरू करते थे. कई परिवार एक साथ अपनी-अपनी वैगंस में यात्रा करते, जिससे वो एक-दूसरे की मदद कर सकें और सुरक्षित रहें.

कैलिफ़ोर्निया तक की यात्रा में छह महीने का समय लगता था.

हरेक गाड़ी (वैगन) में भोजन का सामान, बर्तन, औज़ार, कपड़े और फर्नीचर लदा होता था. हरेक वैगन को खींचने के लिए पांच-छह ताकतवर बैलों की जोड़ियाँ लगती थीं. हर परिवार एक दिन में बारह-से-पंद्रह मील की दूरी तय करता था. अक्सर उन्हें खतरनाक नदियों, गर्म रेगिस्तानों, पहाड़ी चढ़ाई और पथरीली पगडंडियों से होकर गुज़रना पड़ता था.

उस समय बच्चों के लिए स्कूल नहीं होते थे. पर बच्चों को कई प्रकार के काम करने पड़ते थे. औरतें और लड़कियां बुनाई करतीं, कपड़ों की मरम्मत करतीं और रजाई बनाती थीं.

पैच-वर्क की रजाइयां छोटे बच्चों को उनके जन्मदिन या फिर शादी के समय उपहार में दी जाती थीं. सबसे सुन्दर रजाइयों को गाँव के मेलों में इनाम मिलते थे. ऐसी रजाइयों को लोग बहुत कीमती समझकर बहुत संभालकर रखते थे.

उस ज़माने में रजाई एक तरह से परिवार की डायरी होती थी. वर्तमान में उपयोग में लाए जाने वाले डिजाईन – वैगन का पहिया, टेक्सास का सितारा, लाग-केबिन (लकड़ी की कुटिया) कैक्टस का फूल आदि कई नमूनों का उद्‌गम वैगन यात्राओं के ज़माने में ही हुआ.

आप म्यूजियम में उन रजाइयों को आज भी देख सकते हैं. उनमें से कुछ रजाइयां ज़ोज़फीना की रजाई जितनी ही पुरानी होंगी.